AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 *E-ISSN: 3048-9751*

डिजिटल युग में गुरुकुल प्रणाली का पुनर्जीवन : शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

अभिलाषा सिंह*
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय ,लखनऊ
और
प्रो डॉ रश्मि सोनी**
विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री जय नारायण मिश्र पी जी कालेज ,लखनऊ

सार

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से समृद्ध आज के डिजिटल युग में पारंपरिक शिक्षा पद्धति में क्रांति लाने के साथ साथ शिक्षा में अनेक नवीन आयामों को विकसित किया है । प्रस्तुत शोध पत्र में ‘ डिजिटल युग में गुरुकुल शिक्षा का पुनर्जीवन ’विषय का विश्लेषण किया गया है । जिसमें शिक्षा में आधुनिक डिजिटल प्रौद्योगिकी के साथ साथ प्राचीन भारतीय गुरुकुल पद्धति को एक साथ समावेशित करके शिक्षा के एक नवीन एवं अनूठे स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति अपने विचारों से चाहे जितना भी आधुनिक हो जाए , किन्तु वह अपने मूल्य ,परंपरा एवं संस्कृतियों के बिना अपनी पहचान खो देता है । उसी प्रकार शिक्षा के समग्र विकास की एक सम्पूर्ण तस्वीर तभी बनाई जा सकती है, जब शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी के साथ साथ प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं मूल्य आधारित शिक्षा का समायोजन हो । यह अध्ययन भारतीय शिक्षा के गुरुकुल प्रणाली को ई -लर्निंग प्लेटफार्म ,वर्चुअल कक्षा और कृत्रिम बुद्धि जैसे डिजिटल तकनीकी को एक साथ जोड़कर एक समावेशी ,लचीली और मूल्य आधारित शैक्षिक अनुभव प्रदान करने का लक्ष्य रखता है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी डिजिटल शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान परंपरा दोनों को समान रूप से महत्व दिया गया है । यह नीति शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शिक्षा को अधिक सुलभ ,समावेशी और प्रभावी बनाने का प्रयास करती है । इसी के साथ NEP 2020 में भारतीय ज्ञान

परंपरा पर विशेष बल देने का उदेश्य आधुनिक भारतीय शिक्षा में भारतीय संस्कृति ,मूल्य एवं परंपराओं को पुनर्जीवित करना है । इस अध्ययन का प्रमुख ध्येय भारतीय संस्कृति ,मूल्य एवं बौद्धिक संपदा को डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से संरक्षित करते हुए छात्रों का समग्र विकास करना है ।

मूल शब्द – भारतीय शिक्षा पद्धति , मूल्य शिक्षा ,डिजिटल शिक्षा ,समग्र विकास

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में अपनी एक अनूठी पहचान रखती है । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ही हमारे भारतीय संस्कृति ,धर्म ,ज्ञान एवं कला को एक अद्वितीय पहचान मिली है । गुरुकुल शब्द दो शब्दों के योग से बना है गुरु तथा कुल जहाँ गुरु का अर्थ है शिक्षक तथा कुल का अर्थ है परिवार अर्थात गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वह शिक्षा प्रणाली है जिसमें गुरु तथा शिष्य एक परिवार या कुल की भांति रहकर अध्ययन-अध्यापन का कार्य करते थे । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में गुरु के मार्गदर्शन में बालकों के समग्र विकास ,नैतिक मूल्यों ,चारित्रिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया जाता था । (shanwal , 2020) प्राचीन भारतीय शिक्षा के ज्ञान प्रणाली में खगोल विज्ञान ,चिकित्सा और दर्शन ,आयुर्वेद ,युद्ध कला ,योग सहित विभिन्न विषयों को शामिल किया जाता था जिसका उदेश्य समूह चर्चा के माध्यम से बालकों में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना था । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली न केवल छात्रों के बौद्धिक विकास पर केंद्रित हुआ करती थी , अपितु उनके चरित्र निर्माण ,आत्म अनुभव एवं समाज के प्रति उनके अंदर कर्तव्य बोध के गुण भी विकसित करने पर केंद्रित थी । गुरुकुल शिक्षा की जड़े वैदिक काल से अत्यंत गहराई से जुड़ी है जिसमें शिक्षा प्रदान करने का आधार ऋग्वेद ,उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथ थे । शिक्षा के इस व्यवस्था में गुरु तथा शिष्य के मध्य संबंध अध्ययन -अध्यापन के अतिरिक्त आध्यात्मिक एवं भावनात्मक जुड़ाव पर आधारित था । गुरुकुल में रहकर विद्यार्थी न केवल विद्या अर्जन करते थे ,बल्कि वे अपने गुरु के सनिध्य में रहकर तप , सेवा अनुशासन आदि गुणों को भी अपने जीवन में आत्मसात करते थे ।

यद्यपि जैसे जैसे समय परिवर्तित होता गया गुरुकुल शिक्षा परंपरा भी धीरे -धीरे कमजोर होती गई। आज के शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल तकनीकी के आगमन से शिक्षण विधियों में परिवर्तन हुआ है ,जिसके परिणाम स्वरूप कंप्यूटर सहायता प्राप्त निर्देश एवं आनलाइन शिक्षा का एक नवीन युग आरंभ हुआ है। (Made Semadi yasa ,2020) डिजिटल शिक्षा का उदय भारत में पहले से ही हो चुका था परंतु इसमें तीव्रता कोरोना काल में हुआ है । आज के आधुनिक युग से व्यावहारिक ज्ञान ,अनुशासन और चारित्रिक विकास पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ध्यान समकालिक शिक्षा में प्रासांगिक बना हुआ है । जो ऐसे लाभ प्रदान करता है जिसे आधुनिक दृष्टिकोण एवं डिजिटलीकरण के साथ एकीकृत किया जा सकता है। (D.pareek ,2021) वर्तमान युग में शिक्षा एवं शिक्षण के स्वरूप में डिजिटल तकनीकी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। आज ज्ञान का आदान प्रदान पूर्व की तुलना में सहज ,सुगम एवं सुलभ हो गई है। विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म के आने से शिक्षा का स्वरूप लचीला होता जा रहा है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अध्ययन -अध्यापन के लिए विशेष महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत के गौरवशाली ज्ञान एवं विषयों के समृद्ध आलोक में बनाई गयी है। (sagar ,debaki 2024) राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने का मुख्य उदेश्य आने वाली पीढ़ी को भारत के समृद्ध विरासत से अवगत कराना तथा भारतीय शिक्षा के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराना है। डिजिटल शिक्षा के युग में भारतीय परंपरा के शिक्षा को शामिल करने का मुख्य ध्येय शिक्षा को अनुभव केंद्रित ,समावेशी एवं सर्वसुलभ बनाने के साथ -साथ भारतीय शिक्षा को डिजिटल रूप में आने वाली भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना है।

अध्ययन का उदेश्य :

आधुनिक शिक्षा पद्धति में भारतीय मूल्यों को शामिल करके शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास करना।

1. डिजिटल शिक्षा का प्राचीन शिक्षा पद्धति के साथ समायोजन के पश्चात पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।
2. आधुनिक शिक्षा पद्धति में श्रवण ,मनन निधि ध्यासन एवं योग को शामिल करने के परिणाम स्वरूप शिक्षार्थियों के एकाग्रता का अध्ययन ।
3. भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं मूल्यों का डिजिटल रूप में संरक्षण प्रदान करना
4. आधुनिक युग में बालकों को प्राचीन ज्ञान परंपरा से अवगत कराना तथा भावी पीढ़ियों तक हस्तांतरित करना

डिजिटल युग में शिक्षा की चुनौतियाँ :

आज के 21 वीं शताब्दी में शिक्षा में डिजिटल तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के आने से शैक्षिक परिदृश्य में अत्यधिक परिवर्तन दिखाई देता है। कक्षा के पारंपरिक चाक एवं टाक पद्धति के स्थान पर डिजिटल लर्निंग प्लेटफार्म का प्रयोग किया जाने लगा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा में डिजिटल अवसंरचना ,आन लाइन शिक्षण माध्यम ,डिजिटल रिपाज़िटरी ,वर्चुअल लैब इत्यादि के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की बात करता है। परंतु जिस प्रकार शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी के आने से अनेक अवसर के मार्ग खुले है उसी प्रकार शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई है। शिक्षा के डिजिटलीकरण के मार्ग में आने वाली सबसे बड़ी चुनौती है तकनीकी विभाजन ,क्योंकि आज भी भारत में सम्पूर्ण जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा गाँवों में एवं सुदूर क्षेत्रों में निवास करती है जहां पर इंटरनेट जैसी सुविधाए आज भी पहुच नहीं पाई है। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षा तक सभी का समान पहुच संभव नहीं हो पाता है। शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकी के आने के मार्ग में अन्य चुनौती है इंटरनेट पर असंख्य ऐसे सूचनाओं का भंडार होना जिसके विश्वसनीयता का कोई प्रमाण नहीं है। ये सुचनायें विद्यार्थियों को उनके मार्ग से भ्रमित करने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त साइबर बुलिग,सूचना उल्लंघन एवं विद्यार्थियों के गोपनीयता को

भंग करने संबंधित प्रमुख चुनौतियां तकनीकी प्रौद्योगिकी के आने स्व उत्पन्न हुई है। शिक्षा में डिजिटल तकनीकी के आने के कारण विद्यार्थियों के पारंपरिक कौशल में धीरे -धीरे गिरावट आने लगा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के समावेशन पर प्रमुख बल देने के पीछे यह उदेश्य शिक्षा का सभी तक समान पहुच को सुनिश्चित करना है। शिक्षा केवल एक समूह विशेष या वर्ग विशेष तक ही सीमित न होकर सभी के लिए एवं सभी के साथ होना चाहिए।

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का स्वरूप एवं शिक्षा के उदेश्य:

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली है जिसका प्रारंभ वैदिक काल से ही माना जाता है। गुरुकुल शिक्षा एक आवासीय शिक्षा व्यवस्था था जहाँ गुरु तथा शिष्य एक कुटुंब की भांति रहते एवं शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मुख्यतः वेदों और अन्य अन्य शास्त्रों ,उपनिषदों ,सूत्रों आदि के अध्ययन के लिए स्थापित की गयी थी। गुरुकुल में शिक्षा प्रदान करने का माध्यम मौखिक था। गुरुकुल में धर्म ,न्याय शास्त्र ,तर्क शास्त्र तथा खगोल शास्त्र आदि विषय पढ़ाए जाते थे। गुरुकुल में ज्ञान देने के साथ -साथ अनुभव आधारित व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया जाता था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रमुख उदेश्य व्यवहार में सार्थक परिवर्तन लाना तथा जीव ,जगत का ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति के मार्ग खोजना था।

उदेश्य :

1. प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख उदेश्य शिक्षा में धर्म ,यज्ञ ,अनुष्ठान आदि को सम्मिलित करके छात्रों के धार्मिक भवना का विकास करना था।
2. शिक्षा के माध्यम से छात्रों को बौद्धिक रूप से ज्ञानवान बनाने के साथ -साथ उनके चरित्र का निर्माण करना तथा नैतिकता के गुणों को विकसित करना गुरुकुल प्रणाली का प्रमुख उदेश्य था।

3. प्राचीन भारतीय शिक्षा ने छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। छात्रों को भिक्षाटन, योग ,ध्यान आदि के माध्यम से जीवन के सभी परिस्थितियों में संयमित रहने के लिए परिपक्व बनाया जाता था।
4. शिक्षा में अपरा विद्या के माध्यम से छात्रों को व्यावहारिक कलाओं में दक्ष किया जाता था । प्रत्येक छात्र अपने रुचि एवं योग्यता के अनुरूप किसी न किसी शिल्प एवं कला का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे ।

डिजिटल युग में शिक्षा का बदलता स्वरूप :

जिस प्रकार समय धीरे -धीरे परिवर्तित हो रहा है शिक्षा का माध्यम एवं उसके स्वरूप में भी पूर्व की अपेक्षा परिवर्तन होता जा रहा है। सूचना एवं संचार तथा तकनीकी से परिपूर्ण आज के डिजिटल युग में शिक्षा में एक नवीन अयाम एवं स्वरूप की संकल्पना का उदय हुआ है। प्रौद्योगिकी के सर्वव्यापकता के परिणाम स्वरूप शिक्षा की भौगोलिक एवं सामाजिक -आर्थिक सीमाएं धीरे -धीरे समाप्त हो रही है तथा एक लोकतान्त्रिक शिक्षा व्यवस्था का प्रारंभ हुआ है। जैसे जैसे शिक्षा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रभाव बढ़ रहा है ,वैसे वैसे शिक्षा चाक एवं टाक के स्वरूप से बाहर निकलकर स्व निर्देशित एवं व्यक्तिगत सीखने पर आधारित होता जा रहा है। शिक्षा में प्रतिदिन नए आन लाइन प्लेटफार्म ,वर्चुअल (आभासी कक्षा) क्लासरूम एवं फ्लिप्ड कक्षा जैसे नवीन तकनीकी आधारितशिक्षण विधियों का प्रवेश होता जा रहा है जो छात्रों के सीखने के लिए रुचिपूर्ण ,आभाषी वास्तविकता आधारित परिवेश प्रदान करते है। डिजिटल रिपाजिटरी ,इंटरएक्टिव ई बुक्स ,शैक्षिक एप्लिकेशन और मल्टी मीडिया जैसे डिजिटल सामग्री सीखने के अनुभव को और अधिक समृद्ध करते है जिसके परिणाम स्वरूप पठन पाठन पारंपरिक कक्षा की अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक और सर्व सुलभ बनता है। शिक्षा में डिजिटल तकनीकी के प्रयोग ने छात्रों को वैश्विक स्तर पर सभी के साथ जुडने तथा अपने ज्ञान को और अधिक समृद्ध बनाने के अवसर प्रदान करती है। इसके साथ ही सीखने को और अधिक आकर्षक

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed, Open Acces & Google Scholar Indexed International E- Journal
Vol (1&2), Issue (3), Nov -Jan 2024-25 E-ISSN: 3048-9751

बनाने तथा छात्र भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा में संवर्धित वास्तविकता (ए0आर), आभासी वास्तविकता (वी0आर0) तथा गेमीफिकेशन जैसे नए तकनीकी प्रयोग किया जा रहा है। डिजिटल लर्निंग छात्रों के विभिन्न आवश्यकताओं को समझने तथा आज के युग की मांगो के अनुसार तैयार करके शैक्षिक परिदृश्य को एक नवीन स्वरूप देने में अत्यधिक महत्व रखती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक नई सोच व संकल्पना के रूप में:

भारतीय शिक्षा नीति 1986 के बाद लंबे समय तक भारत के शिक्षा प्रणाली में कोई भी परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। अतः शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई तथा लगभग 35 वर्षों के पश्चात भारत में एक नई शिक्षा नीति 2020 लाई गयी। इसके पूर्व छात्रों के पास इंजीनियरिंग ,मेडिकल ,लॉ जैसे कुछ सीमित विकल्प हुआ करते थे। जिससे बालकों को अपनी स्वयं की रचनात्मकता दिखाने का अवसर नहीं मिल पाता था। समय परिवर्तन के साथ बालकों का सीमित विचार क्षेत्र से मुक्त कर उनमें रचनात्मकता एवं नवीन सोच का उदभव करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक व्यापक दस्तावेज है जिसमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा को शामिल करके एक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की संकल्पना की गयी है। जिसमें छात्रों को किसी भी स्तर पर किसी भी विषय के चयन की स्वतंत्रता प्रदान की गई है। इसमें आलोचनात्मक सोच ,समस्या समाधान आदि पर ध्यान केंद्रित किया गया है। NEP 2020 का मुख्य उदेश्य शिक्षक तथा विद्यार्थियों को विभिन्न क्षमता एवं कौशल से परिपूर्ण करके भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उदेश्य तथा शिक्षा में परिवर्तन :

NEP 2020 का प्रमुख उदेश्य शिक्षा में गुणवत्ता, समानता और सुलभता को बढ़वा देना तथा शिक्षा में मूल्य आधारित शिक्षा ,मल्टी डिसिप्लिनरी और तकनीकी शिक्षा को शामिल करके शिक्षा को समावेशी

और सर्व सुलभ बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को परिवर्तित करके नई शिक्षा नीति लाने का प्रमुख ध्येय –

1. **सर्वांगीण विकास:** NEP 2020 का प्रमुख उदेश्य छात्रों के शारीरिक ,मानसिक तथा भावनात्मक विकास पर जोर देना है।
2. **समानता एवं समावेशन:** शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी को समान अवसर प्रदान करना तथा पिछड़े एवं वंचित वर्गों को शिक्षा के माध्यम से मुख्य धारा मे लाना तथा तकनीकी के माध्यम से डिजिटल विभाजन को कम करना है।
3. **गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा व्यवस्था:** वैश्विक मानकों के अनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार करके गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
4. **भाषायी विविधता:** प्राथमिक स्तर तक के बालकों को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना।
5. **तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल में वृद्धि:** NEP 2020 का मुख्य उदेश्य बालकों को भविष्य उन्मुख तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल प्रदान करना है।
6. **शिक्षा का सर्वभौमिकरण:** NEP 2020 मे प्रमुख बल शिक्षा के सकल नामांकन अनुपात मे वृद्धि करना है जिसके लिए 2030 तक स्कूली शिक्षा का सकल नामांकन अनुपात (GER) 100 % तथा 2035 तक उच्च शिक्षा के (Ger)को 50 % तक वृद्धि करने का लक्ष्य रखा गया है।
7. **शिक्षा में नवाचार:** भारत के नवीन शिक्षा नीति में डिजिटल तकनीकी पर विशेष बल देने का उदेश्य है -
   - **डिजिटल शिक्षा का विकास :** NEP 2020 में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि विद्यार्थियों को आनलाइन एवं डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर प्रदान किये जाए। इसके साथ ही डिजिटल संसाधनों एवं ई लर्निंग प्लेटफार्म के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।

- **तकनीकी कौशल का विकास:** विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के तकनीकी एवं कौशल प्रदान किया जाए जिससे वे बेहतर रोजगार प्राप्त कर सके।

NEP 2020 में शिक्षा की संरचना में परिवर्तन:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा की संरचना में परिवर्तन किया गया। इसके पूर्व की शिक्षा नीति 1986 मे शिक्षा की संरचना 10 +2+3 थी जिसको परिवर्तित करके एक नई संरचना को लाया गया जो 5+3+3+4 है।

1. **मूलभूत चरण** – 5 वर्ष की अवधि लिए होगी-
   - **उम्र**– 3 से 8 वर्ष
   - **कक्षा** -आँगनवाड़ी / पूर्व प्राथमिक स्कूल ,कक्षा 1 तथा 2
2. **प्रारम्भिक चरण** – 3 वर्ष की अवधि लिए होगी
   - **उम्र** - 8 से 11 वर्ष
   - **कक्षा** - 3 से 5
3. **मध्य चरण** – 3 वर्ष की अवधि लिए होगी
   - **उम्र** – 6 से 8 वर्ष
   - **कक्षा** – 6 से 8 वर्ष के बालकों के लिए
4. **माध्यमिक चरण** – 4 वर्ष की अवधि के लिए
   - **उम्र** -14 से 18 वर्ष
   - **कक्षा** -9 से 12

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का परिचायक है। यह शिक्षा नीति न केवल शिक्षा को अधिक समावेशी एवं प्रभावी बनाती है ,बल्कि छात्रों के सर्वांगीण विकास पर

भी जोर देती है। इसका उदेश्य छात्रों को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के साथ ही भारतीय शिक्षा को वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व :

NEP 2020 आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति में भारत के पारंपरिक ज्ञान तथा मूल्य को मान्यता देने के लिए पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा को एकीकृत करने पर जोर देती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने का मुख्य उदेश्य भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना तथा वेद ,उपनिषद ,ब्रह्मसूत्र ,आरण्यक आदि के माध्यम से संरक्षित ज्ञान को डिजिटल रूप मे भावी पीढ़ियों को स्थानतारित करना तथा उसे वैश्विक स्तर पर पुनर्जीवित करना है। यदि आज के डिजिटल युग मे भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों को सम्मिलित किया जाता है तो बालकों का न केवल संज्ञानात्मक स्तर पर विकास होगा बल्कि क्रियात्मक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विकास किया जा सकेगा। बालकों मे भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से अनुशासन ,दया ,परोपकार एवं कर्तव्य निष्ठा जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। आश्रम पद्धति में गुरु तथा शिष्य साथ रहकर अध्ययन अध्यापन करते थे जिससे उनके अंदर एक जुड़ाव स्थापित होता था परंतु आज के आन-लाइन एवं वर्चुअल कक्षा के युग में शिक्षकों की भूमिका ज्यादा सक्रिय नहीं है इसलिए विद्यार्थियों के साथ उनका जुड़ाव नहीं पता। यदि आधुनिक शिक्षा मे गुरुकुल शिक्षा पद्धति का समावेशन किया जाता है तो गुरु शिष्य के संबंधों में सुधार हो सकता है। आश्रम पद्धति में शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम श्रवण ,मनन एवं निधिध्यासन था जो बालकों के ध्यान को एकाग्रचित रखने में सहायता प्रदान करता था परंतु आज के डिजिटल युग मे तकनीकी के अत्यधिक विकास के परिणामस्वरूप शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम कक्षा से निकलकर मोबाइल फोन तक सीमित हो गया है जो बालकों के ध्यान को एकाग्रचित करने मे अवरोध प्रदान करते है। शिक्षा में इंटरनेट के आगमन से बालकों के पास अवांछित जानकारी के भंडार होने के कारण वे आवश्यक एवं अनावश्यक जानकारी के मध्य के अंतर

को समझने में असमर्थ होते है जो उनमें असंतुष्टि ,क्रोध एवं चिचिड़पन के भाव जाग्रत करते है आधुनिक शिक्षा के प्रारूप में श्रवण ,मनन एवं निधिध्यासन को जोड़कर शिक्षार्थियों के ध्यान को एकाग्रचित करने में सहायता प्रदान की जा सकती है तथा उनके अंदर संतुष्टि के भाव उत्पन्न किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

भारत में शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण एवं सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा में तकनिकी ज्ञान के साथ -साथ वेदों ,पुराणों ,उपनिषदों ,श्रुतियों आदि का समावेश किया जाए ताकि बालक न केवल बौद्धिक रूप से समृद्ध बने बल्कि नैतिक ,चारित्रिक एवं भावनात्मक रूप से भी समृद्ध बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालकों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया गया है। जिसमें यह बताया गया है कि बालकों को न केवल किसी एक विषय को पढ़ने पर जोर दिया जाए बल्कि उन्हे जो भी विषय एवं कौशल पसंद है वह उसका चयन कर सकता है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा व्यवस्था मौखिक शिक्षा पर आधारित थी जिसमें श्रवण ,मनन एवं निधिध्यासन पर जोर दिया जाता था। क्योंकि उस काल में शिक्षा प्राप्त करने का उदेश्य ज्ञान प्राप्त करने था न की केवल योग्यता प्राप्त करना था इसीलिए उसस काल में प्रमाण पत्र प्रदान करने का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। गुरुकुल पद्धति में शिक्षा प्राप्त करने का उदेश्य विद्यार्थियों का नैतिक ,सामाजिक ,भावनात्मक एवं बौद्धिक विकास करना था ,इसके साथ ही उनके अंदर आत्म निर्भरता ,कर्तव्य निष्ठा ,प्रेम ,दया ,समानता आदि जैसे सनातन मूल्यों के सृजन पर भी जोर दिया जाता था। परंतु आज के डिजिटल युग में बालकों के अंदर इस प्रकार के मूल्य धीरे -धीरे कम होते जा रहें है। यदि आधुनिक युग में पाठ्यचर्या के निर्माण ,शिक्षण और अधिगम संबंधी क्रियाकलापों में डिजिटल तथा मूल्य शिक्षा को एकीकृत किया जाए तो आधुनिक शिक्षा के साथ -साथ प्राचीन शिक्षा को भी आगामी पीढ़ियों तक हस्तांतरित किया जा सकता है तथा भारत के शिक्षा को विश्व पटल पर उल्लेखित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अमानी0एस0(2024) “इन्टीग्रेटिंग इंडियन नालेज सिस्टम: रेविटालाइजिंग इंडिया’स एजुकेशन लेंडस्केप” इंटरनेशनल जर्नल फार मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, डी0ओ0आई0: *10.36948/ijfmr.2024.v06i03.23666*
2. चतुर्वेदी0ए0.(2022) “पोटेनसियल वायलेशन ऑफ दी राइट टु एजुकेशन इन इंडिया: डिजिटल एजुकेशन, अन्डर प्रीवीलेज्ड चिल्ड्रन & कोविड 19” एस0एस0आर0एन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल, DOI:10.2139/ssrn.4031647
3. गुप्ता,ए. (2024), “अ स्टडी ऑफ दी साइनटिफिक अप्रोच इन्हेरीटेड इन दी इंडियन नालेज सिस्टम” दी0साइनटिफिक टेम्पर DOI: 10.58414/scientifictemper.2024.15.2.55
4. डी,पारिक. (2020) “अ0सर्वे ऑन गुरुकुल एजुकेशन सिस्टम ” दी जर्नल ऑफ कानटेमपररी इश्यू इन बिजनेस एण्ड गॉवर्मेंट , DOI: 10.47750/CIBG.2021.27.03.099
5. सिंह,गीता. (2020) “ भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता ” अरहंत मल्टीडीसीप्लिनरी इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च जर्नल ,ISSN 2278-5655
6. शनवाल, वीके . (2024) “ डेवलपमेंट ऑफ दी गुरुकुल एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया ’’ जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड टीचर ट्रेनिंग इनोवेशन , Doi:10.61227/jetti.v1i2.65
7. www.cheggindia.com
8. www.egyankosh.ac.in